संसार को विषमय से अमृतमय बनाने के मार्ग

-ब्र.कु.गंगाधर

जिंदगी माना ही बांस में से वांसूरी वनाने की कला सिखने का ईश्वर प्रदत्त अवसर।

एक विद्वान चिंतक के पास जिज्ञासु जीवन का मर्म समझने के लिए पहुंच गया। उसने नौकरी से एक मास की छुट्टी निकाली और जीवन लक्ष्य के बारे में समझने चाहता था। उनका परिचय पूछने के बाद चिंतक ने मात्र दो शब्द कहें - 'रूको' और 'मुक्त हो जाओ', ऐसा बोलकर और कहा आप जा सकते हैं। और जिज्ञासु को विदा किया।

जिज्ञासु की मूझ बढ़ गई। वह बेचैन हो रहा था। पूरे उन्तीस दिन जीवन के कर्म के बारे में विचार करते रहा। किन्तु 'रूको' और 'मूक्त हो जाओ' यह शब्द उनका पीछा नहीं छोड़ रहा था।

और वह व्यक्ति भोजन के समय पुस्तक के पेज पलट रहा था, उसी वक्त उनकी पत्नी बांस बेचने वालों को कह रही थी कि अब बांस - बेचते-बेचते 'रूको', बास में से एक बार सुंदर बांसुरी बनाईए तो आपको मुंह-मांगी कीमत मिलेगी।

और वह जिज्ञासु को पत्नी की बात से जीवन संदेश मिल गया।

जिंदगी माना ही बांस में से बांसुरी बनाने की कला सिखने का ईश्वर प्रदत अवसर। परंतु हम 'बांस' में ही (अटक) 'रूक' जाते हैं। संगीत प्रागाट्य करना है, लेकिन बांस में जिस रीति से छेद किया जाता है उनकी तैयारी के बिना! बांस का मोह हमें इतना ज्यादा लगता है कि इस 'मोह' में से 'मुक्त' (छूट) ही नहीं सकते। दु:ख बिना जीना यह हम सब मानते हैं। दु:ख बिना जीवन की यात्रा यह हमारे मन 'वरदान' है। हमें बांसुरी बजाने के बदल सूनने का विषय मान बैठे हैं। कोई बांसुरी बजाए और हम वाह वाही! करें, उनसे ज्यादा कष्ट हम उठाने को तैयार ही नहीं है। 'मोक्ष' की व्यक्ति कामना करता है, लेकिन वे भी कोई साधु, संत, कथाकार, धार्मिक पाठ की तरकीब बताने वाले आदि।

हम अपनी जात के पास ही 'अटक' जाते हैं। इसलिए संसारिकता हमें घेर लेती है। संसार के आकर्षण इतने मजबूत होते हैं कि हम उसमें से 'मुक्त' नहीं हो सकते। संसार चक्र हमें फंसाता है, ऐसा हम कहते हैं, हकीकत में हम ही संसार में फंसते हैं। संसार को हराने के लिए जन्म लिए मनुष्य, संसार के आगे कारमी हार खा लेता है। राग और त्याग संसार के दो चक्र के बीच मनुष्य पिसता रहता है। परिणामस्वरूप न ही वह सच्चा 'राग' बन पाता और न ही सच्चा 'त्याग' कर सकता।

अपने को 'रूकना' नहीं आता, अपने से जुड़े ख्यालों से, भ्रामक सिद्धांतों से, मिथ्या तर्क से, भ्रष्ट मान्यताओं से, खतरनाक आदतों से रूकने के विषयक अज्ञान और भटकने के विषयक की उत्सुकता यही मानव जीवन की पहचान है? जिंदगी स्वयं में ही एक 'विडियोग्राफर' है। आपकी वाणी, वर्तन, कृति और प्रवृत्ति इन सबका रिकॉर्डिंग किया करता है। इसलिए ही मृत्यु के बाद भी दुष्टकर्म मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता। जो 'रूक' सकता है, वही मूक्त हो सकता है, अन्यथा मात्र भटक ही सकता है। 'संसार' किताब में लिखा है उनके अनुसार श्रीनागार्जुन नाम के गुरु, बड़े पंडित, लेकिन पोथी पंडित नहीं, अहंकारी नहीं, सच्चे ज्ञानी। उनके पास एक गड़ेरिया शिष्य आया। उसने गुरु नागार्जुन को कहा कि 'गुरु' यह संसार मेरे से छूटता नहीं है।

उनकी बात सुनकर नागार्जुन ने कहा - 'तेरे से मेरा प्रश्न अलग है। संसार कैसे भी करके पकड़ में क्यां नहीं आता? तुझे सच में संसार छोड़ना है? तो जो मैं कहूं वैसा ही कर! मुझे यह बता कि तुझे सबसे प्यारा कौन लगता है? गड़ेरिया ने कहा कि मुझे तो मेरी भैंसे ही बहुत प्यारी लगती है। 'नागार्जुन ने कहा कि तू एक गुफा में तीन दिन निरंतर जाप कर। तू अपने मन को बताया कर कि 'मैं भैंस हूँ, मैं भैंस हूँ।'

शिष्य गड़ेरिया ने उसी अनुसार ही किया तीन दिन बाद नागार्जुन ने कहा कि अब तू गुफा से बाहर आ जा। गड़ेरिया शिष्य ने कहा कि मैं बाहर कैसे आ सकता हूँ? गुफा का द्वार छोटा है और मेरे सींग बड़े हैं। नागार्जुन खुद गुफा में गये और शिष्य को भान में लाये, दर्पण दिखाया। शिष्य ने स्वयं का चेहरा दर्पण में देखा तो सींग तो थे ही

शेष पृष्ठ 4पर...

श्रीमत पर चलने से कन्फ्युजन खत्म हो जाती है

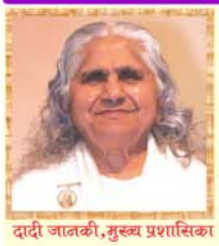

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हर दिन मुरली से कई बातें सीखने को मिलती है, कई प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है, कई कमजोरियों को खत्म करने की शक्ति मिल जाती, कई समस्याओं का समाधान मिल जाता है। मुरली ब्राह्मण जीवन में खुराक भी है तो मेडिसिन भी है। सिर्फ दवाई मिले, खुराक न मिले तो हेल्दी नहीं बन सकते, खुराक मिलती है तो दवाई भी मिलती है। ये कमाल है बाबा की, जो हर बच्चे की नब्ज अनुसार हर रोज खुराक वा दवाई दे देता है। जब हम साकार में बाबा की मुरली सुनते थे, तो मुरली सुनने के बाद बाबा से कहते थे - बाबा, आपने ये मुरली मेरे लिए चलाई। ऐसा भासना आती थी कि बाबा न सिर्फ सामने बैठने वालों के लिए मुरली चला रहा है लेकिन सारे विश्व भर की आत्माओं को याद करता है। कईयों को बाबा का साक्षात्कार हुआ है। जब बाबा का साक्षात्कार होता है तो खुशी होती है यह तो मेरा बाबा है। आत्मा में जान आ जाती है। बिन्दू को मेरा कहना थोड़ा कठिन है। जब ये सामने आता है तो लगता है - ये मेरा है, ये मेरा अच्छा गाइड बन सकता है, फीलिंग आती है। कई हैं जिनको कोर्स नहीं कराया है, पहले दिन से ही मुरली सुनते ब्राह्मण बन गये हैं। हमको किसी ने कोर्स नहीं कराया है। एक सखी ने पूछा कि लक्ष्मी बनेगी? हमने कहा - हाँ, हमने सोचा कि ये ऑफर तो अच्छी है, ये ऑफर मन ने स्वीकार कर ली। जो कल्प पहले वाली आत्मा है, उनसे कहो देवता बनेंगे? तो फौरन उनका विचार चलेगा कि कैसे बनेंगे? परमात्मा का वारिस बनने से देवता बन जायेंगे। वारिस बनने में एक तरफ मेहनत है, दूसरे तरफ कोई मेहनत नहीं है। मेहनत तब लगती है जब श्रीमत का पालन नहीं करते हैं। श्रीमत का पालन करते-करते मेहनत से छुट जाते हैं। प्रीत बुद्धि से विजयन्ती हो जाते हैं। श्रीमत को पालन करने से कन्फ्युजन खत्म हो जाती है। अनेकों की मत पर बुद्धि को भटकाने की आदत से छूट जाते हैं। श्रीमत पर चल बोझ बाबा को दे देते हैं। वर्सा बाबा से लेना है, तो कोई बोझ नहीं है। वह वर्से का अधिकारी है। वारिस वह बनेगा जो अपने को बच्चा समझेगा। उसको संभालने वाला कौन? एक ही बाप। वही बाप टीचर है, सतगुरु है। गोद में एक ने लिया, पढ़ाये दूसरा, गुरु बने तीसरा, नहीं, यह बड़ा सहज हो गया - जिसने अपना बनाया, रावण की दुनिया से छुड़ाया। खींचा। रावण के वर्से ने दु:खी-अशांत बना दिया था। उससे निकालने के लिए, बचाने के लिए बाबा ने फट से बांहे पसार कर गोद में ले लिया - आओ मेरे बच्चों, और हमको भी खींच होने लगी। हर एक अपने अनुभव को देखें - कैसे खींच से बाबा के बने हैं। उस समय जाति, धर्म, देहभान छूट जाता है। रूहानी बाप रूहों को खींचता है, जैसे चुम्बक सुई को खींचती है। खींचती है तो दिल चाहता है - तुम्हीं से बोलूं, तुम्हीं से सुनूं, तुम्हीं को देखूं।

बाबा को पत्र लिखते ही मन हल्का हो जाता है। जवाब मुरली में मिल जाता है। रूह-रिहान बाबा से करो तो जवाब मिल जाता है। पत्र लिखते-लिखते जवाब मिल जाता है। जिसकी बाबा से रूहरिहान करने की आदत पड़ जाती है वो कभी मुरझाते नहीं। वारिस वो बनेगा जो कभी मुरझायेगा नहीं। जो मुरझाता है वह वारिस नहीं बन सकता है। कोई भी समस्या आई तो मुरझाने की क्या बात है। बाबा संभाल लेता है। हर हालत में हर्षित रहने के लिए बाबा ने ज्ञान और योग दोनों सिखा दिया है। यदि ज्ञान काम नहीं कर रहा है या बुद्धि तक काम कर रहा है तो योग लगा लो, योग हर्षित बना देगा, उदासी खत्म कर देगा। उदास होना माना पद कम कर लेना। पद की कमी हो जाती है। कोई कैसी भी हालत में उदास नहीं हो सकते। दु:ख भरी बात है तो भी उदासी नहीं आ सकती, उदासी आई माना उस समय बाबा हमको कैसे देखेगा। बाबा के जो वारिस हैं, सपूत हैं, उनके आगे समस्यायें आयेंगी, चली जायेंगी। बाबा बच्चे को उदास नहीं होने देता। समस्या बड़ी या बाबा की मिलकियत बड़ी? बाबा कहता है मेरी सारी मिलकियत के तुम वारिस हो। उसको क्यों भूलें। कभी न भूलें। दूसरा बाबा ने कहा दे दान तो छूटे ग्रहण।

मुरली का महत्व तथा सुनने की विधि

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

मुरली सुनने के समय आप यह लक्ष्य रखो कि जो प्वाइंट बाबा सुना रहा है, मानो बाबा ने ज्ञान की प्वाइंट शुरू की, ज्ञान की प्वाइंट सुनाते-सुनाते बाबा धारणा की प्वाइंट में चले जाते हैं फिर धारणा के प्वाइंट के बाद सेवा के प्लैन में चले जाते हैं। तो जैसे एक ही टाइम हम चक्कर लगा रहे हैं। तो सिर्फ मुरली सुनने के टाइम हमारे को मुरली सुनने की विधि आनी चाहिए। सिर्फ प्वाइंट्स सुन रहे हैं, यह नहीं। सुनते-सुनते कभी थकावट हो सकती है, बोर भी हो सकते हैं, जैसे बच्चे को नींद में सुलाने के लिए माँ लोरी देती है तो नींद न भी आनी हो तो भी आ जाती है। यदि थकावट है और मुरली सिर्फ सुन रहे हैं तो यह मुरली कभी-कभी लोरी का काम कर देती है, नींद ले आती है। लेकिन वास्तव में मुरली सुनने की जो विधि है उसी प्रमाण सुनो। बाबा के एक-एक बोल को सुनते उसमें अपनी बुद्धि को बिजी कर दो, अनुभव करते जाओ। मानो बाबा स्वर्ग की स्मृति दिला रहा है तो हम सुनते हैं - ठीक है, सतयुग में एकता थी, एक धर्म था, एक राज्य था और वहां दु:ख नहीं था, अशांति नहीं थी, सुन तो लिया। रिपीट भी कर लेंगे। लेकिन सिर्फ सुनो नहीं। बिल्कुल उस सतयुग के समय में आप पहुंच जाओ। अनुभव करो - हाँ, हमारा राज्य था। बाबा क्या याद दिला रहा है और हमारी आत्मा में यह संस्कार तो हैं ही, हम सतयुग में कितनी बार राज्य करके आये हैं! बहुत बार राज्य किया है। हमारी आत्मा में राज्य के संस्कार भरे हुए हैं। इमर्ज करना चाहो तो हो जाते हैं। आज टेप रिकार्ड में भी गीत भरा हुआ होता है तो हम जो भी लाइन सुनना चाहते हैं, सुन सकते हैं। हमारी आत्मा का टेपरिकार्ड जो है उसमें आप जो बजाना चाहो वह बज सकता है ना! इसीलिए जिस समय बाबा कोई ज्ञान की बात सुनाते हैं उस समय सिर्फ सुने नहीं, वहां पहुंच जाओ। कभी बाबा कहते हैं परमधाम में शिवबाबा के साथ तुम आत्माएं निराकार थी, बिन्दू थी तो परमधाम पहुंच जाओ। बाबा कह रहा है परमधाम और आप वहां अनुभव कर रहे हो। आत्मा परमधाम में एकदम बिन्दू स्टार माफिक थी, सूक्ष्म थी तो हो जाओ सूक्ष्म, अनुभव करो आत्मा का। बुद्धि रूपी विमान राकेट से भी तेज है। मुरली सुनते-सुनते सिर्फ सुनो नहीं, लेकिन अनुभव की सैर करो। परमधाम घूम कर आयेंगे, स्वर्ग घूम कर आयेंगे, संगमयुग घूम कर आयेंगे, तो कलियुग दु:खधाम भी घूम कर आयेंगे। सारा ही चक्र एक मुरली में बाबा हमको लगवाता है। तो उस अनुभव में चले जाओ। जैसे बाबा कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी बनो। तो स्वदर्शन चक्र माना क्या सिर्फ यह रिपीट करना कि सतयुग में हम ऐसे थे, हमारे 8 जन्म हुए, फिर 12 हुए, फिर द्वापर कलियुग में 63 जन्म हुए। सतयुग में एक धर्म था फिर द्वापर में और धर्म आये? तो स्वदर्शन चक्र को रिपीट करने में कितना टाइम लगा? एक मिनट! तो क्या यही स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। क्या यही रिपीट करते रहें? इसको स्वदर्शन चक्र थोड़ेही कहा जाता है, अनुभव करो - सतयुग में 8 जन्म थे तो सतयुग में क्या हमारी स्टेज थी, आत्मा की स्टेज क्या थी? गोल्डन एज क्यों कहा जाता है? वहां एक धर्म, एक राज्य क्यों था, कारण क्या था - उस अनुभूति में चले जाओ।

दूसरा कहते भी हैं कि मुरली में एक जादू है, है तो सारा जादू लेकिन एक जादू विशेष मुरली में है - जैसे आपके सामने कोई समस्या आई, वैसे तो सारा संसार ही समस्याओं का सागर है और सागर में लहरें नहीं हो तो उसे सागर नहीं, नदी कहेंगे, सागर माना ही लहरें, वह तो होना ही है, तो समस्यायें भिन्न-भिन्न रूप से आती हैं, कभी तन की, कभी मन की, कभी धन की, फिर सम्बन्ध-सम्पर्क में भी कई बातें आती हैं, लौकिक परिवार में भी आती है तो ब्राह्मणों में भी आती है और ब्राह्मणों द्वारा माया और भी ज्यादा आती है। ब्राह्मण जीवन में ही समस्याओं के क्वेश्चन आते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि ये तो समस्यायें आनी ही हैं और जितना-जितना आगे बढ़ेंगे उतने ही क्वेश्चन महीन होते जायेंगे।